हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

YEAR: 10 ISSUE: 26 - January 2018 *Published by: Hindi Pracharini Sabha - Long Mountain, Mauritius* ISSN 1694-3481

वर्ष 10 अंक 26 जनवरी 2018 | संपादक / टंकन / सज्जा : यंतुदेव बुधु | भाषा गई तो संस्कृति गई

सम्पादकीय

मॉरीशस में साहित्य सृजन

मॉरीशस जैसे छोटे से देश में साहित्य सृजन का कार्य ज़ोर-शोर से चलता आ रहा है। भाषा प्रचार के लिए लेखन एक सशक्त माध्यम होता है। साहित्य की रचना हर विधा में हो तो साहित्य समृद्ध होता है। हमारे देश में लेखन-कार्य कई दशकों से होता आ रहा है और वर्तमान स्थिति को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह सफलतापूर्वक चलता रहेगा। लेखन को बढ़ावा देने हेतु अभी हाल में विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा देश में एक दोदिवसीय कार्यशाला का भी आयोजन हुआ जिसमें हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया। यह आयोजन बहुत सफल भी रहा। इस आयोजन के लिए सचिवालय को बधाई।

साहित्यकार कलाकार होता है। वह अपनी लेखनी से दिल की बात, अपना निजी विचार, अपनी कल्पना, समाज की अच्छाइयाँ-बुराइयाँ तथा अपना आक्रोश भी कागज़ पर उतारने की कोशिश करता है जिस में वह सफल भी होता है। यह कोई नई बात नहीं है कि साहित्यकारों में भी आपस में भेद-भाव होता है। कोई नहीं चाहता है कि उससे आगे कोई दूसरा निकल जाए। आपस में द्वेष-भाव भी होता है। लेखक दूसरों की रचनाएँ पढ़ना नहीं चाहता है पर अपनी कृति दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। क्या यह शत प्रतिशत सम्भव हो सकता है ?

पूर्व में प्रकाशन को लेकर मॉरीशस में काफी समस्याएँ हुई हैं। ऐसा भी देखा गया है कि लेखक को आगे बढ़ने से रोकने के लिए संपादक ने उसकी रचना दराज़ में दबा दी। इस तरह कई लेखक दराज़ में ही दब-कर मर गए। लेख प्रकाशित करवाना टेढ़ी खीर थी। मॉरीशस के प्रथम उपन्यासकार श्री कृष्णलाल लालबिहारी भी इस समस्या में पड़कर आगे नहीं बढ़ सके और एक ही उपन्यास के साथ लेखन-जीवन समाप्त हो गया। लिखने की ख्वाहिश धीरे-धीरे समाप्त हो गई। यह बात केवल मॉरीशस की ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की है।

आज प्रौद्योगिकी के आने से यह समस्या अपने आप दूर हो गई। लोग अपनी रचनाएँ ऑन लाइन छाप देते हैं और उनको बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता है। आज नवजवान लेखन के क्षेत्र में उतर रहे हैं, हमारी ओर से उनको शुभकामना है।

यंतुदेव बुधु : प्रधान – हिंदी प्रचारिणी सभा

हिंदी प्रचारिणी सभा की सम्भावित गतिविधियाँ – 2018

1.	विद्यालय प्रवेश	--- शनिवार	6 जनवरी
2.	ज़िलाध्यक्षों की बैठक	--- शनिवार	27 जनवरी
3.	कार्यशाला / संगोष्ठी	--- रविवार	28 जनवरी
4.	बृहद अधिवेशन	--- शनिवार	24 मार्च
5.	कविता वाचन-प्रतियोगिता	--- प्रथम चरण	12 मई
		अंतिम चरण	9 जून
6.	परीक्षाओं का आवेदन	--- क. प्रवेशिका	28 अप्रैल
		ख. सम्मेलन	2 जून
		(केवल हिंदी भवन में)	3 जून
		ग. अंतिम तिथि	28 जुलाई
7.	स्थापना दिवस/कवि सम्मेलन	--- शनिवार	23 जून
8.	कार्यशाला (उत्तमा III)	--- शुक्रवार	3 अगस्त
9.	श्रुतिलेख प्रतियोगिता (पाँचवी कक्षा)	--- अगस्त (छुट्टी में)	
10.	हिन्दी दिवस	--- शनिवार	18 अगस्त
11.	निबन्ध प्रतियोगिता	--- अगस्त (छुट्टी में)	
12.	परीक्षाएँ	--- क. छठी - शनिवार	15 सितम्बर
		ख. प्राथमिक -	15 अक्तूबर से
		ग. प्रवेशिका -	10 नवंबर
		घ. सम्मेलन -	17,18,19,20,21 दिसंबर
13.	समावर्तन समारोह	---	8 दिसंबर

इस अंक में पढ़िए : *पृष्ठ*

- लेखक सम्मेलन 2
- मोंताई ब्लाँश में वार्षिकोत्सव 2
- सरस्वती पाठशाला का वार्षिकोत्सव 2
- सृजनात्मक लेखन पर कार्यशाला 3
- इतिहास के पन्नों से 3
- समावर्तन समारोह 2017 4

जिस धागे की, गाँठ खुल सकती है
उस धागे पर कैंची नहीं चलानी चाहिए !
"स्वामी विवेकानन्द"

हिंदी भवन में 'लेखक सम्मेलन' कार्यक्रम

बाईं ओर से – प्रो. विनोद कुमार मिश्र, डॉ. उषा शर्मा, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, डॉ.अंचराज तथा डॉ इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

गुरुवार 14 दिसंबर को शाम के तीन बजे हिंदी प्रचारिणी सभा के सभागार में विश्व हिंदीसचिवालय, हिंदी लेखक संघ तथा हिंदी प्रचारिणी सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में एक 'लेखक सम्मेलन' के कार्यक्रम का आयोजन हुआ । इस कार्यक्रम में भारत से आए हुए दो महानुभाव– प्रो.आनन्द वर्धन शर्मा तथा डॉ. उषा शर्मा का भी स्वागत किया गया ।

उपस्थित अतिथियों में प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव विश्व हिंदी सचिवालय, डॉ. माधुरी रामधारी, उपमहासचिव विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर, हिंदी प्रचारिणी के सदस्यगण, हिंदी लेखक संघ के सदस्य तथा कई हिंदी प्रेमी रहे ।

हिंदी प्रचारिणी सभा के महासचिव श्री धनराज शम्भु ने उपस्थित मेहमानों का स्वागत किया । सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने सभा के प्रकाशनों का ज़िक्र किया तथा भाषा–प्रचार मे लेखन के महत्त्व पर बात की । हिंदी लेखक संघ के मान्य प्रधान ने उपस्थित मेहमानों का स्वागत किया तथा संघ की गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया । संघ के प्रधान डॉ. अंचराज ने संघ द्वारा प्रकाशित पुस्तकों तथा पत्रिकाओं पर बात की । प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने सचिवालय के कार्यों का ज़िक्र किया तथा भारत–मॉरीशस के संबंध के बारे में बताया ।

डॉ. अंचराज पुस्तक भेंट करते हुए ।

श्री मधु पुस्तक भेंट करते हुए ।

भारत से आए हुए प्रो.आनन्द वर्धन शर्मा ने सभा द्वारा हो रहे कार्यों की सराहना की तथा हस्तलिखित पत्रिका 'दुर्गा' के संरक्षण पर अपना विचार दिया । डॉ. उषा शर्मा ने भारत–मॉरीशस के मैत्री संबंध पर बात करते हुए अपनी खुशी ज़ाहिर की । अंत में लेखक संघ द्वारा भारतीय मेहमानों को अवसर के प्रकाशन भेंट किए गए । कार्यक्रम लगभग दो घंटे का रहा जो सफ़लतापूर्वक सम्पन्न हुआ ।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥
"भारतेंदु हरिश्चन्द्र"

मोंताईं ब्लाँश गाँव में वार्षिकोत्सव

रविवार 17 दिसंबर को हिंदी प्रचारिणी सभा से पंजीकृत 'शिक्षित हिंदी पाठशाला' का तेरहवाँ वार्षिकोत्सव मनाया गया । यह उत्सव सर्वगुण निधाननाथ मंदिर के सभागार में मनाया गया । मौके पर हिंदी प्रचारिणी सभा के महासचिव श्री धनराज सभा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे । उपस्थित अतिथियों में माननीय सुमीलदत्त भोला व्यापार, उद्यम एवं सहकारिता मंत्री, फ्लाक ज़िला परिषद के अध्यक्ष श्री विक्रम हरदयाल, सनातन धर्म टेंपल्स फेडेरेशन के प्रधान श्री राजेंद्र रामध्यान तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे ।

श्रीमती हितेशा रामजुमन के स्वागत भाषण के पश्चात स्कूल के प्रधान श्री मुकेश रामजुमन ने पाठशाला की प्रगति के बारे में जानकारी दी । उन्होंने बताया कि पाठशाला की गतिविधियाँ व्यापक हैं और यह पूरे गाँव के लिए गौरव की बात है । हिंदी प्रचारिणी सभा के महासचिव श्री धनराज शम्भु ने हिंदी भाषा के महत्त्व, भाषा–संस्कृति के प्रचार–प्रसार एवं सुरक्षा संबंधी बातों के अलावा पाठशाला की प्रगति को रेखांकित किया ।

मंत्री भोला जी ने कहा कि यदि आज वे इतनी सारी जनता के सामने बोल रहे हैं तो इसकी नींव बैठका और सायंकालीन तथा सप्ताहांत चलनेवाली पाठशालाओं की बदौलत ही है । उन्होंने वहाँ उपस्थित अभिभावकों से माँग की कि अपने बच्चों को हिंदी भाषा पढ़ाएँ क्योंकि इससे वे अनेक तरह से लाभांवित होंगे। श्री राजेंद्र रामध्यान ने भी भाषा, संस्कृति व धर्म की रक्षा के लिए प्रयत्न करते रहने की बात की । श्री विक्रम हरदयाल ने भी भाषा–संस्कृति की रक्षा के साथ हिंदी पढ़ने की बात दोहराई ।

उस पाठशाला के शिक्षकों ने बताया कि वहाँ के छात्रों ने नाटक समारोह, संस्कृत परीक्षा तथा हिंदी साहित्यिक परीक्षाओं में प्रथम स्थान तथा दस प्रथम में स्थान प्राप्तकर स्कूल का मान बढ़ाया। छात्रों को पारितोषिक एवं प्रमाणपत्र दिये गए । छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ जिसकी लोगों ने खूब प्रशंसा की । अंत में मिठाइयों तथा जूस से सबका सत्कार किया गया । कार्यक्रम की प्रस्तुति श्रीमती हितैषी शिवचरण–रामजुमन ने की ।

विवरण –धनराज शम्भु

सरस्वती हिंदी पाठशाला का वार्षिकोत्सव

25 दिसंबर को क्लेरफों, वाक्वा की सरस्वती हिंदी पाठशाला का वार्षिकोत्सव बड़े जोश और उत्साह के साथ मनाया गया। हिंदी प्रचारिणी सभा की कार्यकारिणी समिति के सदस्य श्री तारकेश्वरनाथ ग्रिधारी तथा शिक्षिका श्रीमती जीता ने कार्यक्रम के आयोजन का भार उठाया था । उस अवसर पर हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतेदेव बुधु उपस्थित थे । बच्चों द्वारा प्रार्थना, नृत्य, कविता व गाने प्रस्तुत किए गए। अंत में सभा के प्रधान ने आर्शीवाद स्वरूप तथा छात्रों को प्रोत्साहित करने हेतु दो शब्द सुनाए। छात्रों को प्रमाणपत्र एवं पारितोषिक प्रदान किए गए ।

सृजनात्मक लेखन पर कार्यशाला

मंचासीन भारतीय विद्वानों के साथ श्री धनराज शम्भु

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में 11–12 दिसंबर को एक सृजनात्मक लेखन कार्यशाला का आयोजन हुआ था। "लेखक कभी मरता नहीं, बल्कि अपनी रचनाओं व कृतियों द्वारा सदा अमर रहता है।" इस उक्ति से डॉ. आनन्द बर्धन शर्मा ने कार्यशाला का श्रीगणेश किया। यह कार्यशाला विश्व हिंदी सचिवालय, शिक्षा मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के मिले–जुले सहयोग से आयोजित हुआ था।

कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कार्यवाहक उच्चायुक्त महामहिम श्री किशन दान देवल थे। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र जी ने उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए सृजनात्मक कार्यशाला के महत्त्व पर बात की। कार्यशाला कई सत्रों में बाँटी गई थीं। इस कार्यशाला में भारतीयों के साथ–साथ स्थानीय लोगों की भी भागीदारी रही।

भारत से आए हुए डॉ. आनन्द बर्धन शर्मा , डॉ. उषा शर्मा तथा श्री तेजेन्द्र शर्मा। इन सभी साहित्यकारों ने लेखन पर बहुत ही सुन्दर विचार दिए। कहानी–लेखन, कविता व क्षणिकाएँ, लघुकथा–लेखन, नाटक–लेखन व मंचन पर चर्चा हुई तथा बहुत सारे विचार व सुझाव प्राप्त हुए।

हिंदी प्रचारिणी सभा के महासचिव तथा साहित्यकार श्री धनराज शम्भु ने भी इस सृजनात्मक लेखन कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लिया। पहले दिन के दूसरे सत्र में, कहानी लेखन व पठन पर कार्य हुआ उस में भारतीय साहित्यकारों के साथ शम्भु जी ने अपना योगदान दिया तथा दूसरे दिन समापन सत्र में श्री धनराज शम्भु ने कार्यशाला पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

इस आयोजन से स्थानीय हिंदी प्रेमी सृजनात्मक लेखन को लेकर काफी लाभांवित हुए। ऐसे आयोजन से साहित्य सृजन को जरूर बढ़ावा मिलेगा तथा नई पीढ़ी लेखन की ओर दिलचस्पी दिखाएँगी।

विवरण – धनराज शम्भु

सरलता और शीघ्र सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। – *"लोकमान्य तिलक"*

इतिहास के पन्नों से

सुरुज प्रसाद मंगर भगत

हिंदी के पुजारी, त्याग की मूर्ति व हिंदी के सूर्य श्री सुरुज प्रसाद मंगर भगत का जन्म 8 जून 1908 में लोंग माउंटेन में हुआ था। कहा जाता है कि उन्हें बचपन में विधिवत शिक्षा नहीं मिली। गाँव की हिंदी पाठशाला में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई। भारत से आए पंडित–पुरोहितों के सम्पर्क में रहकर उनमें अध्ययन की प्रेरणा जागी।

भगत जी हिंदी के अनन्य सेवक, साहित्यकार तथा पत्रकार के रूप में स्मरण किए जाते हैं। हिंदी प्रचारिणी सभा में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। वे 1941 से 1976 तक सभा के महामंत्री रहे। 1937 में श्री जयनारायण रॉय भारत से उपाधि लेकर देश लौटे तब भगत जी का संपर्क उनसे हुआ और उनसे मिलकर भाषा–प्रचार–कार्य के साथ–साथ इलाहबाद के 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' से परीक्षायोजन किया।

भगत जी के लिखे निबंध, लेख व कहानियाँ भारत के पत्रों में भी छपते थे। वे 1940 के लगभग 'जनता' साप्ताहिक पत्र का सम्पादन करते थे। 1961 से 1964 तक उन्होंने 'नवजीवन' साप्ताहिक पत्र का संपादन किया। 1941 में भगत जी की देख–रेख में देश में प्रथम बार के लिए हिंदी सम्मेलन का आयोजन हुआ था।

पंडित राजेंद्र अरुण ने लिखा है कि भगत जी हिंदी के उन कर्मठ सेनानियों में से थे, जिन्होंने मॉरीशस में हिंदी के विकास और उसकी प्रतिष्ठा के लिए अथक संघर्ष किया। हिंदी भाषा के संवर्धन के लिए भगत भाइयों ने जी–तोड़ मेहनत की। उनके अन्य भाई थे – रामलाल भगत, लेखमन भगत तथा उनके मौसेरे भाई गिरधारी भगत जिनका असली नाम रामदास रामलखन था। हिंदी प्रचारिणी सभा के कार्यों को बढ़ावा देने में भगत परिवार का बड़ा योग–दान रहा है। अपने गन्ने के खेत और पैसे दान कर उन लोगों ने हिंदी भाषा के प्रचार को गति दी।

सुरुज प्रसाद मंगर भगत जी का देहावसान 08 सितम्बर 1976 को हुआ। हिंदी जगत के लिए यह एक दुखद घटना थी। इनकी मृत्यु पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए प्रधान मंत्री सर शिवसागर रामगुलाम तथा उनके मंत्री मंडल के सदस्य ,भारतीय उच्चायुक्त श्री मदन मोहन खुराना तथा भारत सरकार के अधिकारी श्री बच्चू प्रसाद सिंह भी उपस्थित रहे। वे अपने पीछे छह पुत्र–योगेश, विपिन, रमेश, यतीन, सुमन तथा शेखर और कमला नाम की एक पुत्री छोड़ गए। उनकी पत्नी राजमतिया सिरतन उनके लिए प्रेरणा–श्रोत रही।

हिंदी प्रचारिणी सभा भवन में 26 सितंबर 1976 को उनकी स्मृति में एक शोक सभा का आयोजन हुआ जिसमें प्रायः समस्त हिंदी प्रेमी श्रद्धांजलि अर्पित करने आए। धर्मयुग पत्रिका के संपादक श्री धर्मवीर भारती ने मॉरीशस पर विशेषांक में भगत जी को श्रद्धांजलि–सुमन पेश करने के लिए उनपर एक लेख लिखा था। हिंदी प्रचारिणी सभा के सभागार को एस.एम. भगत सभागार नाम देकर उनको अमरता प्रदान की गई। भगत जी के नाम 'बाल कथा लेखन प्रतियोगिता' का पुरस्कार निर्धारित है।

किसी की कोई बात बुरी लगे तो दो तरह से सोचें
यदि व्यक्ति महत्त्वपूर्ण है ,तो बात भूल जाएँ और
बात महत्त्वपूर्ण हो तो व्यक्ति को भूल जाएँ।
"स्वामी विवेकानन्द"

समावर्तन समारोह 2017

परम्परा अनुसार हर वर्ष हिंदी प्रचारिणी सभा दिसंबर महीने में समावर्तन समारोह मनाती है। इस वर्ष भी यह समारोह भव्य रूप से मनाया गया। कार्य-क्रम की शुरूआत कुमारी खुशी जोरी द्वारा एक कृष्ण भजन पर आधारित नृत्य से हुई। समारोह की मुख्य अतिथि उद्यम तथा सहकारी मंत्री का प्रतिनिधित्व श्रीमती आरती रामभरोस कर रही थी। विशिष्ट अतिथि उप-भारतीय उच्चायुक्त श्री देवल जी तथा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका श्रीमती योगाचार्या प्रतिष्ठा जी थी। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र तथा अन्य कई गणमान्य अतिथि उत्सव की शोभा बढ़ा रहे थे।

सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत करते हुए सभा द्वारा किए जा रहे कार्यों का संक्षिप्त विवरण पेश किया। विश्व हिंदी सचिवालय के प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने हिंदी भाषा को लेकर भारत और मॉरीशस के संबंधों पर बात की। भारतीय उच्चायुक्त का प्रतिनिधित्व कर रहे उप-भारतीय उच्चा-युक्त श्री देवल जी ने छात्रों को आशीर्वाद स्वरूप दो शब्द सुनाए। इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका श्रीमती आचार्या प्रतिष्ठा ने अपने मीठे वचन से छात्रों को मोहित कर दिया। श्रीमती आरती रामभरोस ने भी अपने वक्तव्य से छात्रों को हिंदी भाषा पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रति वर्ष हिंदी प्रचारिणी सभा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में योग-दान के लिए दो महानुभावों को 'हिंदी प्रचारिणी सभा सम्मान' से विभूषित करती है। इस वर्ष श्री सुमनदेव सुखनाथ तथा श्रीमती बिद्वन्ती रामजुमन को यह सम्मान प्रदान किया गया। इसी अवसर पर छठी कक्षा तथा प्रवेशिका वर्ष 2017 में प्रथम दस में स्थान प्राप्त छात्रों को तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में छात्रों के साथ -साथ कई अभिभावक, शिक्षक, सभा के सदस्य, महात्मा गांधी संस्थान के व्याखाता, पं. उमाकान्त दीपचन्द, डॉ. इन्द्रदत चन्नू, सनातन धर्म टेंपल्स फेडेरेशन के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र रामध्यान, सरकारी स्कूल के पर्यवेक्षक श्री जीबन, अवकाश प्राप्त पर्यवेक्षक श्री रामदोस, विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधिगण तथा हिंदी प्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रस्तोता हिंदी प्रचारिणी सभा के महा-सचिव श्री धनराज शम्भु थे।

चित्रावली - समावर्तन समारोह 2017